कन्हैया ले चल परली पार ...

कन्हैया ले चल परली पार,
जहाँ बिराजें मेरी श्यामा प्यारी अलबेली सरकार ।।

गुण अवगुण सब तेरे अर्पण, पाप पुण्य सब तेरे अर्पण,
खोट सहित मन तेरे अर्पण,
मैं तेरे चरणों की दासी,
तू मेरा प्राणाधार कन्हैया ले चल ... ।।1।।

(मैं) तेरी आस लगा बैठी हूँ, जग से नाता तोड़ चुकी हूँ,
अपना आप लुटा बैठी हूँ,
सांवरिया मैं तेरी दासी,
तू मेरा मनहार कन्हैया ले चल ... ।।2।।

जीवन नैया डूब रही है, काहू की अब आस नहीं है,
बहुत हुई अब हार गई मैं,
अब तो आओ मेरे प्रीतम,
क्यूँ छोड़ा मझधार कन्हैया ले चल ..।।3।।

http://www.govindbhargav.in